Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) e- ISSN: 2582-2004
Volume 02, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.02.02.07 Open Access

साम्प्रदायिकता के नए रूप तथा हिन्दी उपन्यास

अमित कुमार
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

पिछले दो दशकों के दौरान साम्प्रदायिकता को केन्द्र बनाकर जो उपन्यासों लिखे गये वे स्वतंत्रता के बाद के दौर में इस विषय पर लिखे गये उपन्यासां से कई मायनों में भिन्न हैं और स्वतंत्रता के बाद जो साम्प्रदायिक विमर्श पर उपन्यास लिखे गये उनकी मुख्य समस्या इतिहास के सबसे बड़े मानवीय विभाजन की पीड़ा थी। लेकिन पिछले दशकों के दौरान साम्प्रदायिकता को केन्द्र बनाकर जो उपन्यास लिखे गये हैं वे विभाजन के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य से उतना महत्वपूर्ण समुदायों के बीच बढ़ता मानवीय अलगाव क्रोध है।

हिन्दी उपन्यासों में प्रेमचन्द्र युग कालीन उपन्यासों में हिन्दू जातीयता तथा हिन्दू पुनरूत्थानवादी सोंच दिखाई देती, जिनमें मुसलमान के प्रति हीन भावना का प्रदर्शन है। शुरूआत में जिन उपन्यासों में हिन्दू मुस्लिम पात्रों का जो कथानक सामने आया है। उनमें अधिकतर मुसलमान पात्र इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। जिनकी कल्पना प्रधान घटना को मनमाने ढंग से पेश करते हुए। उनकी विकृत छवि उभारी गयी है तथा उन्हें स्वार्थी अत्याचारी कहा गया है।

प्रेमचंद का हिन्दी उपन्यासों के क्षेत्र में पदार्पण एक नये युग का आरम्भ उनके युग में उपन्यास पहली बार आधुनिक युग में प्रवेश करता है। किन्तु प्रेमचन्द्र साम्प्रदायिक सद्भाव को लक्ष्य बनाकर उपन्यास लेखन नहीं किया। इन्होने अपने उपन्यासों में मुसलमानों को केन्द्रीय विषय नहीं बनाया।

प्रेमचन्द्र ने अपने उपन्यासों में जरूर दिखाया है कि किस प्रकार कट्टरपंथी मुल्ले और पण्डित दोनों सम्प्रदायों के लोगों की भावनाओं को भड़काकर आपसी सम्प्रदायिक दंगे कराते हैं

Received: 26.10.2019 Accepted: 19.11.2019 Published: 20.11.2019

जिसमें साधारण हिन्दु-मुस्लिमों की जाने जाती हैं, उनका घर परिवार तबाह होता है और वे तथाकथित लोग धार्मिक नेता बनकर ऐश करते हैं-''प्रेमचन्द के उपन्यास साम्प्रदायिक समस्या से सीधे न टकराते हुए भी सामाजिक यथार्थ के एक अंश के रूप में उनका चित्रण करते हैं। साम्प्रदायिक हैवानियत का कड़ा विरोध जताते हुए, साम्प्रदायिक सद्भाव ही उनका मुख्य प्रतिपाद्य है। हिन्दू मुस्लिम दोनों को जीवन और घर परिवारों के बारे में प्रेमचद ने लिखा है और बड़ी सहजता से लिखा है। दोनों धर्मों तथा समाजों की रूढ़ियों की कड़ी आलोचना करते हुए दोनों धर्मों के अच्छे बुरे पात्र उनके यहाँ है। प्रेमचन्द साम्प्रदायिकता को धर्म से नहीं जोड़ते। वे उसे राजनीतिक समस्या मानते हैं जो धर्म और संस्कृति की खाल ओढ़कर साधारण हिन्दू-मुसलमानों को उकसाती और भड़काती है।''[१] प्रेमचन्द के युग में अन्य उपन्यासकारों के उपन्यासों में भी नहीं हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिकता का चित्रण नहीं मिलता है। जहाँ हिन्दू-मुस्लिम प्रसंग आता भी हैं तो सामाजिक सद्भाव के रूप में आता है।

स्वतंत्रता के पूर्व तक भारतीय हिन्दी उपन्यासों में मुस्लिमों की समस्याओं को लेकर उन्हें उपन्यासों का प्रमुख पात्र नहीं बनाया गया। भले ही गौड़ रूप में वह सामने आता रहा है। ''हिन्दी उपन्यासों का इतिहास इस बात का गवाह है मुस्लिम पात्रों का जिक्र स्वाधीनता पूर्वकालीन उपन्यासों में मिलता है। इसका मूल कारण यह है कि भारतीय समाज में मुस्लिम अभिन्न अंग के रूप में साथ-साथ चलता रहा। लेकिन मुस्लिम जीवन को केन्द्रीय विषय बनाकर उस पर स्वतंत्र रूप से लेखन का प्रशंसनीय प्रयास तो स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ही हुआ है। स्वाधीनता की प्राप्ति और देश विभाजन से दो घटनाएं है जिन्होंने सम्पूर्ण भारतीय समाज को प्रभावित कियां इस प्रभाव से मुस्लिम समाज भी नहीं बच पाया।''[२]

प्रेमचंदोत्तर काल में उपन्यासकारों की एक ऐसी श्रृंखला सामने आती है। जो अपने सामाजिक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कृतियों का सृजन करते हैं। यशपाल, भीष्म साहनी, अमृतराय,

Received: 26.10.2019 Accepted: 19.11.2019 Published: 20.11.2019

रांगेय राघव, राहुल सांस्कृत्यायन, राही मासूम रजा, बलवंत सिंह, गुलशेर खॉ शानी, विभूति नारायण आदि के उपन्यासों में हिन्दू मुस्लिम की उन समस्याओं का चित्रण हुआ है। जिन्हें हम आज की समस्याएं कहते हैं जिनमें साम्प्रदायिकता को सजीवता के साथ उभारा गया है। यशपाल के उपन्यास झूठा सच (१९५८) में देश विभाजन तथा उसमें हुयी मुस्लिमों की विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया गया है। जिसमें यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि सत्ता प्राप्त करने के लिए किस प्रकार साम्प्रदायिकता को जन्म देकर फायदा उठाते हैं। भीष्म साहनी का 'तमस' (१९७३) में देश विभाजन तथा विभाजन पूर्व भी समस्याओं का चित्रण है। उसी तरह राही मासूम रजा का उपन्यास 'आधा गाँव' (१९६६) सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जिसमें देश के करोड़ो मुसलमानों की समस्याओं का उजागर है। जिन्हें भारत में रहते हुए भी अपनी भारतीयता का प्रमाण देना पड़ता है।

राही मासूम रजा ने बहुत सजीवता से भारत में रहने वाले मुसलमानों की विभिन्न समस्याओं का उद्घाटन एक बड़े फलक पर किया है- ''स्वतंत्रयोत्तर भारत में एक मुसलमान के लिए अपनी भारतीयता प्रमाणित करना या कर पाना कितना दुष्कर है। यह किसी से छिपा नहीं है। देश के लिए जान देने के बावजूद उनकी गिनती भारतीय के रूप में न होकर मुसलमान के रूप में ही होगी और मुसलमान होने के नाते देश के प्रति उनकी कुर्बानी भी प्रश्नचिन्हों के घेरे में होगी-गद्दार हिन्दू गद्दार होने पर भी गद्दार नहीं माना जायेगा किन्तु देशभक्त मुसलमान भारतीय होकर भी पाकिस्तान का एजेन्ट माना जायेगा। यह है आज के हिन्दुस्तान का माहौल।''[३]

समकालीन शुरूआती दौर (१९८० से पहले) के उपन्यासों के केन्द्र में सिर्फ देश का विभाजन, साम्प्रदायिकता, राजनीतिक प्रश्न तथा राष्ट्रीयता और मुसलमान आदि दिखाई देते हैं। किन्तु १९८० के बाद के उपन्यासों में इन सबके अतिरिक्त मुस्लिम समाज की अन्य आंतरिक

Received: 26.10.2019 Accepted: 19.11.2019 Published: 20.11.2019

समस्याओं का चित्रण भी मुस्लिम लेखक एवं लेखिका द्वारा किया जाता है। इसी समय को समकालीन लेखन की सीमा भी स्वीकार करते हैं। यहाँ से समकालीन विमर्शों के माध्यम से लेखकों की कृतियों को देखने तथा परखने की शुरूआत होती है।"

हिन्दी उपन्यासों में अल्पसंख्यक विमर्श के रूप में मुस्लिम समाज का अंकन अत्यन्त यथार्थता से एवं ईमानदारी से किया हुआ दिखाई देता है। राही मासूम रजा, गुलशेर खाँ शानी, असगर वजाहत, नासिरा शर्मा, मेहरून्निशा परवेश और अब्दुल बिस्मिल्ला जैसे अनेक साहित्यकारों ने मुस्लिम समाज, जीवन के चित्रण में अहम भूमिका निभायी है।"[४]

आज वर्तमान समय में मुस्लिम लेखकों का बड़ा वर्ग सामने आया है जो अपनी समस्याओं को लेकर लगातार उपन्यास लिख रहे हैं। मुस्लिम समाज में आज यदि कोई सर्वाधिक यातना पूर्ण जीवन जी रहा है तो वे मुस्लिम स्त्रियां है। आज भी इनमें पर्दा प्रथा, बहुपत्नीत्व तथा तीन तलाक जैसे मुद्दों ने मुस्लिम स्त्रियों को बंधक बनाकर रखा गया है। आज इन समुदायों से शबाना आजमी, नासिरा शर्मा तथा तसलीमा नसीन जैसी स्त्रियां स्वतंत्रता पूर्वक अपनी मांगे रखती हैं। तथा विभिन्न प्रकार के संगठन मुस्लिम स्त्रियों की स्वाभिमानी जिंदा को बहाल करने के लिए सक्रिय हैं। इस पर विचार करते हुए क्षमा शर्मा लिखती हैं कि- "तमिलनाडु अल्पसंख्यक आयोग की भूतपूर्व अध्यक्ष और वकील बेदर सईद मुसलमान महिलाओं का संगठन चलाती हैं। उनका कहना है कि मुसलमानों में निकाह प्रथा को फौरन खत्म कर दिया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि जितने उलेमा है उतने ही फतवे हैं मुसलमान स्त्रियों को संगठित होकर अपने हकों की लड़ाई लड़नी चाहिए।"[५]

आज मुस्लिम स्त्रियों में तीन तलाक का मुद्दा पर तीखी बहस छिड़ी हुई है। इस मुद्दे को लेकर सुप्रीम कोर्ट तक गई है। जिसमें मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सवालों के खिलाफ हस्ताक्षर अभियान चलाकर तीन तलाक के खिलाफ आवाज उठायी है। जिसमें उन्हें निरन्तर

Received: 26.10.2019 Accepted: 19.11.2019 Published: 20.11.2019

शोषित किया गया है। आज मुसलमान औरत रोजाना खुद को तरह-तरह के सवालों से घिरा पा रही हैं। मुझे पता भी है कि कोई उसी कौम के लोग कम अक्ल कहकर उच्चतम न्यायालय में उनकी याचिका को खारिज किये जाने की मांग की है। इन कौम वालों ने ही मुस्लिम औरतों को निर्णय लेने में अक्षम बताया है। इस सबके बावजूद उसी की मेहनत से इस मुद्दे पर देश के कोने-कोने से उठी आवाज ने तीन तलाक आन्दोलन को एक मजबूत दिशा दी है। उसी की कोशिश से यह मुद्दा पहली बार राष्ट्रीय मुद्दा बन गया है।''[६]

आज समकालीन समय में मुस्लिम वर्ग की समस्याओं का चित्रण किया गया है। उसमें अब्दुल बिस्मिल्लाह 'झीनी-झीनी बिनी चदरिया'' 'मुखड़ा क्या देखें' असगर वजाहत-'सात आसमान,' 'कैसी आगी लगाई,' मंजूर एहतेशाम-'सूखा बरगद' 'दास्तान-ए-लापता,' बदीउज्जमा 'छांको की वापसी,' 'सभा पर्व,' 'गीतांजली श्री-'हमारा शहर उस बरस,' भगवान दास गोरवाल-'काला पहाड़,' शिवमूर्ति-त्रिशूल कमलेश्वर कितने पाकिसतान, दूधनाथ सिंह आखिरी कलाम, प्रियवंद- वे वहाँ बैठे हैं? विभूति नारायण राय-'शहर में कर्फ्यू' नासिरा शर्मा-'जिन्दा मुहावरे' आदि बहुत से उपन्यास सामने आये हैं जिनमें मुस्लिम जीवन की बहुत सी समस्याओं का उभारा गया है।

इस समकालीन विविध उपन्यासों से पता चलता है कि भारत की तमाम जातियों की ही तरह भारतीय मुस्लिम समाज कि आंतरिक कमजोरियों और अंर्तविरोधियों से ग्रस्त हैं। उनमें भी शुरूआत में उदारवादी और कट्टरवादी दो ऐसे वर्गों का विकास हुआ है जिनमें ऊँच-नींच, शिया-सुन्नी, नस्लवाद तथा वंशवाद आदि का भेदभाव दिखाई देता है। यही धारणाएं भारतीय मुसलमानों को अन्य देशों के मुसलमानों से भिन्न करती है। स्वतंत्रता के पश्चात से मुसलमान लगातार भारतीय हिन्दुआं की उपेक्षा का शिकार रहे हैं। और साम्प्रदायिक दंगों में लगातार मारे

Received: 26.10.2019 Accepted: 19.11.2019 Published: 20.11.2019

जाते रहे हैं,” मुसलमानों की मूल समस्याएं अशिक्षा बेरोजगारी आदि ता रही है जो बहुसंख्यक समाज की है, लेकिन इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि मुस्लिम समाज हिन्दू समाज की तुलना में अधिक पिछड़ा हुआ है। जहाँ तक मुसलमानों की सबसे बड़ी समस्या साम्प्रदायिक दंगों का सवाल है, हम देखते हैं कि इसमें कोई कमी नहीं आयी है, बढ़ोत्तरी हुई।”[७] मुस्लिम राजनीति आज भी अच्छा नेतृत्व न होने के कारण गुमराह है क्योंकि उनके जो नेता हैं, वे भी अवसरवादी, धार्मिक, सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों पर आधारित राजनीति कर रहे हैं। जिसका लाभ भारतीय राजनीतिक दल उठाते हैं। और अपनी कूटनीति से मुस्लिमों का विकास रोक देते हैं।

इस प्रकार आज के समय में साम्प्रदायिकता नया रूप ले लिया है। जिसमें राजनीति के कारण जो साम्प्रदायिकता पहले से देशों, दो धर्मों में होती थी। वहीं आज दो जातियों में देखने को मिल रही है। सरकार अपने लाभ के लिए किसी भी धर्म या जाति के बीच आपसी मतभेद लाकर साम्प्रदायिक दंगे करवा रही है। जिससे साम्प्रदायिकता के इस रूप में मुस्लिम ही नहीं बल्कि सभी धर्मों एवं जातियों में यह समस्याएं उभरती हुई नजर आ रही है।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

१. शिव कुमार मिश्र- साम्प्रदायिक और हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ १११-११२
२. डॉ० अर्जुन चव्हाण-विमर्श के विविध आयाम-पृष्ठ-१५७
३. शिव कुमार मिश्र- साम्प्रदायिकता और हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ-८७
४. डॉ० अर्जुन चव्हाण- विमर्श के विविध आयाम, पृष्ठ-१५८
५. क्षमा शर्मा-स्त्रीवादी विमर्श-समाज और साहित्य पृष्ठ-५३-५४
६. नाइशहसन- लेख दैनिक जागरण १६ मई २०१७
७. असगर वजाहत- हंस अगस्त २००३, पृष्ठ-०६

Received: 26.10.2019 Accepted: 19.11.2019 Published: 20.11.2019